UGC APPROVED

ISSN : 2394-3580 VOLUME - 4 Dec. 2017

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Research Journal SRF Book Publication

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor - 2.9

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,

Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

ISSN : 2394-3580

IN Hindi & English

SWADESHI RESEARCH FOUNDATION

Peer Review & Referred Journal

A Monthly Journal of

Multidisciplinary Research

Honorable Member of Advisory & Editorial Board

Name	Subject / Department	University / College
Dr. Ashwani Mahajan	Department of Economic	Delhi University
Prof. A.D.N. Bajpai	Department of Economics	Vice Chancellor, H.P. University, Shimla
Prof. Vijay Parihar	Department of Economics	M.G.C.V. Chitrakoot
Prof. Khem Singh Daheriya	Department of Hindi	Amarkantak University
Dr. Niti Jain	Department of Economics	Amarkantak University
Dr.Tapan Choure	School of studies in Economics	Vikram University Ujjain
Prof. Dr. N.G. Pendse	Department of Economic	R.D.V.V. Jabalpur (M.P.)
Prof. Dr. S.N. Mishra	Department of Ancient Indian History & Archaeology	R.D.V.V. Jabalpur (M.P.)
Prof. Dr. T.N. Shukla	Department of Hindi	R.D.V.V. Jabalpur (M.P.)
Prof. Dr. Ram Shankar	Department of Political Science	R.D.V.V. Jabalpur (M.P.)
Dr. Mritunjay Kumar Singh	Department of Economic	R.D. Govt. P.G. College Mandla
Dr. Alkesh Chaturvedi	Department of History	Govt. Mahakaushal College Jabalpur (M.P.)
Dr. Amarjeet Kaur Gill	Department of adult Education	R.D.V.V. Jabalpur (M.P.)
Dr.NeetaTapan Choure	Department of Economic	Govt.Girls College Ujjain
Dr. Nipun Silawat	Microbiology	Principal Sciencetist MPCOST
Dr. Dhurv Kumar Dixit	Department Sociology	Kesharwani College
Dr. Narendra Kumar Kosti	Department of Economics	Govt. Mahakaushal College Jabalpur
Dr. Pradeep Trivedi	Department of Lib. & Information Science	M. Lib. Govt. Girls College Seoni
Dr. Sanjay Singh Chauhan	Deparment of Research	Swami Vivekanand University Sagar (M.P.)
Smt. Mona Gupta	Department of English	Govt. Arts College Panagar
Dr. Sunil Sharma	LLB, LLM, PhD-Law	Law Department R.D.V.V. Jabalpur
Dr. Kirti Vishwakarma	M.B.B.S., M.S.	Bangalore
Dr. Shailendra Basedia	Commerce & Management	Global Eng & Management
Dr. Asha Rani	Department of Hindi	R.D.V.V. Jabalpur (M.P.)
Dr. Ravesh Tamana Tajeeri	Department of Sanskrit	R.D.V.V. Jabalpur (M.P.)
Dr. Pravesh Pandey	Department of Political Science	R.D.V.V. Jabalpur (M.P.)
Dr. Akhilesh Jain	M.Com , F.C.A. , LLB	C.A.
Dr. Abhay Singh	Department Ancient History	R.D.V.V Jabalpur
Dr. Yogendra Payasi	Life Science	Atalbihari Vajpayee Hindi university
Dr.Anil Sumitra	Media & Mass Communication	Atalbihari Vajpayee Hindi university
Om Prakash Parmar	Management	Atalbihari Vajpayee Hindi university

Editor

Dr. Devendra Vishwakarma

B.Com., M.A. (ECo. Rural Development), M.B.A., M.S.W., L.Lb.
Asstt. Prof. Eco. Vikramaditya College, Jabalpur (M.P.)
320, Sanjeevani Nagar, Garha, Jabalpur (M.P.)

Contents

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	डिण्डौरी जिले भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण एवं रूपांतरण	डॉ. (श्रीमती) प्रीती पाण्डे	1-9
2	THE CONTRIBUTION OF T.S NAGABHARANA TO KANNADA FILM INDUSTRY – A STUDY	MAHESHA D Dr. B.K RAVI	10-14
3	A SYSTEMATIC STUDY OF INFLATION IN INDIA	SHACHI GUPTA DR. DILIP SINGH HAZARI	15-19
4	SEVENTEENTH CENTURY THE CHANGES & THE REVOLUTION IN ENGLISH LITERATURE	DR. AJIT KUMAR MOHAPATRA	20-21
5	A Study of Woman characters in R.K. Narayan's Novel; The dark Room	Dr. Manoj kumar tembhre	22-24
6	बौद्ध साहित्य में आर्थिक पर्यावरण : ऐतिहासिक अध्ययन	डॉ. रामकुमार अहिरवार	25-29
7	नागपुरी करमा लोक गीतों में जनजीवन	सुमन कुमार कनीय	30-35
8	असहयोग आन्दोलन में डिण्डौरी जिले के जनजातियों का योगदान	डॉ. अमरसिंह उद्दे	36-39
9	Women Empowerment : A brief Analysis	Dr. Sapna Gehlot Vandana Yadav	40-44
10	Regional Disparity in FDI Inflows In India	Aditi Pandey	45-49
11	Growth and Productivity in India: Trend analysis	Sumedha Pandey	50-55
12	सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	अनंदी लाल कुर्मी	56-62
13	STUDY OF DETERMINANTS OF FOREIGN DIRECTINVESTMENT (FDI) IN INDIA	RAVIKIRAN P Dr. G P RAMAN	63-68
14	A Scenario on Special Economic Zone in India: a Analytically study of Its Performance, Policies and Problems	Dr. Rakesh Dhand Prof. Rahul Sharma	69-78
15	Crisis of Domestic Fuels in Chitrakoot Region and Future Prospects	Dr. N.L. Misra Mirthunjai Mishra	79-85

16	Content based image retrieval using machine learning approach : A Review	Hirdesh Patidar Dr. Rajendra Gupta	86-92
17	BMI and Nutritional Awareness	Khushboo Sahu Dr. Rajlakshmi Tripathi	93-98
18	SIVAGIRI MUTT-A CITADEL OF CULTURAL SERVICES	DR. O.K. PRAVEEN	99-101
19	बालाघाट जिले के आर्थिक विकास में लघुवनोपजों का योगदान	डॉ. कुसुमलता उइके	102-104
20	Corporate Social Responsibility : Impact and challenges	Dr. Vimmi Behal	105-109
21	धूमिल और उनकी कविताओं में संवेदना	डॉ. सुनीता उपाध्याय	110-113
22	मध्यप्रदेश में सोयाबीन उत्पादन की प्रवृत्ति एवं विपणन	डॉ. वनश्री मेहता	114-121
23	औद्योगिक निवेश में संस्थागत वित्त का महत्व (एक विश्लेषण)	डॉ0 किरण सिंह	122-125
24	भारतीय इस्पात (स्टील) उद्योग में निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मंजू सिंह	126-129
25	ग्रामीण विकास में पंचायतीराज की भूमिका	डॉ. मोतीलाल कुर्मी	130-135
26	भारतीय स्टेट बैंक का इतिहास एवं विकास	सविता सोहाने	136-138
27	प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम का क्रियान्वयन एवं पद्धति	डॉ. संजय तिवारी, श्रीमती शिल्पा भारद्वाज (मिश्रा)	139-143
28	किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं पर विद्यालयीन परिवेश के प्रभाव का अध्ययन	स्वाती पाठक, डॉ. ममता बाकलीवाल	144-148

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Dec. 2017
A Monthly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

मध्यप्रदेश में सोयाबीन उत्पादन की प्रवृत्ति एवं विपणन

डॉ. वनश्री मेहता
अतिथि, व्याख्याता डी. एन. जैन महाविद्यालय जबलपुर

शोध –सार :– प्रस्तुत शोध में मध्यप्रदेश में सोयाबीन उत्पादन वृद्धि में क्षेत्राच्छादन, उत्पदिता एवं विपणन के योगदान का अध्ययन किया गया। उक्त अध्ययन हेतु मुख्यतः द्वितीयक समंकों का चयन किया गया। सोयाबीन के क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादिता हेतु वर्ष 2000–01 से 2012–13 तक समंको का संकलन किया गया। मध्यप्रदेश के लगभग 35 जिलों में सोयाबीन की खेती की जा रही है, 2012–13 के आंकड़ों के अनुसार जिनमें से 22 जिलों में सोयाबीन का लगभग 90 प्रतिशत उत्पादन किया जा रहा है। प्रदेश के प्रमुख सोयाबीन उत्पादक जिलों में उज्जैन, शाजापुर, देवास, सीहोर, सागर, धार, मंदसौर, विदिशा, बैतूल, छिन्दवाड़ा आदि महत्वपूर्ण है। वर्ष 2012–13 में प्रदेश में 6.03 मिलियन हैक्टेयर पर 7.80 मिलियन टन सोयाबीन का उत्पादन हुआ तथा प्रति हैक्टेयर उत्पादिता 1293 किग्रा रही। प्रदेश में देश का लगभग 53: सोयाबीन उत्पादन हो रहा है। मध्यप्रदेश सोयाबीन के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में तो देश में प्रथम स्थान पर है साथ ही इसके प्रसंस्करण एवं विपणन की प्रमुख इकाईयों एवं माध्यमों में भी आगे है। प्रदेश में सोयाबीन के विपणन का प्रमुख माध्यम कृषि उपज मण्डियॉं है तथापि विगत् वर्षों मं इसमें कमी दिखाई दे रही है। प्रदेश में सोयाबीन के उत्पादन वृद्धि हेतु कई प्रतिष्ठान अनुसंधान कार्य में लगे हुये हैं जिससे उन्नत किस्म की सोयाबीन का उत्पादन किया जा सके तथापि सोयाबीन की प्रति हैक्टेयर उत्पादिता वृद्धि में अभी और अधिक प्रयास किये जाने आवश्यक है।

प्रस्तावना :– मध्यप्रदेश की प्रमुख तिलहनी फसलों में सोयाबीन, मूंगफली, राई–सरसों, अलसी, सूर्यमुखी, नाइजर एवं अरण्डी आदि है, जिसमें सोयाबीन प्रथम स्थान पर है। सोयाबीन उत्पादन के मामले में आठवें दशक से ही मध्यप्रदेश का नाम सबसे अग्रणी है आज भी इसके उत्पादन के अतिरिक्त प्रसंस्करण और विपणन में भी पूरे देश में मध्यप्रदेश प्रथम स्थान पर है। इसी के फलस्वरूप मध्यप्रदेश को "सोयाबीन राज्य" घोषित किया गया है। सोयाबीन सर्वप्रथम उत्तर भारत एवं मध्यप्रदेश में ही उत्पादित किया गया। प्रदेश में प्रोटीन से संपन्न सोयाबीन के उत्पादन और इसके बने उत्पादों की मात्रा में निरंतर वृद्धि हो रही है। सोयाबीन के पीले बीजों ने इसकी पैदावार में क्रांति ला दी है। खेती करने के नये तरीकों के इस्तेमाल के फलस्वरूप पिछले 10–15 वर्षो में सोयाबीन की उपज में लगातार वृद्धि दिखाई दे रही है। खाद्य तेलों के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की दृष्टि से सोयाबीन के तेल की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। देश में प्रतिवर्ष लगभग 10–15 लाख टन सोयाबीन तेल का उत्पादन होता है, मध्यप्रदेश इस मामले में अग्रणी है। यहॉं सोयाबीन से खाद्य तेल निकालने की 60 से अधिक इकाईयॉं हैं। इनमें सोयाबीन का आटा भी तैयार किया जाता है। अपने विशिष्ट गुणों के कारण सोयाबीन की मांग तेजी से बढ़ रही है। सोयाबीन ही एक मात्र ऐसी फसल है जो दलहन एवं तिलहन दोनों प्रकार से जानी जाती है। सोयाबीन के सोया पेय, सोया तेल, सोया दूध, सोया आटा जैसे उत्पाद भी विभिन्न ब्राण्ड के नाम से बाजार में आ गये हैं, लेकिन प्रचुर प्रोटीन के बावजूद इन्हें अपने दैनिक आहार में शामिल करने में अभी भी अधिसंख्य लोगों ने रूचि नहीं दिखाई है जिस कारण सोयाबीन को दलहन के रूप में विशेष पसंद नहीं किया जाता तथापि वर्तमान में सोयाबीन के महत्व को लोग समझने लगे हैं तथा इसका उपयोग प्रतिदिन बढ़ रहा है।

मध्यप्रदेश में सोयाबीन का उत्पादन का एक प्रमुख कारण तत्कालीन समय में किसानों द्वारा रबी मौसम (अक्टू से मार्च) में की जाने वाली खेती तथा खरीफ मौसम में खेतों को खाली छोड़ दिया जाना रहा। प्रदेश के किसान खरीफ मौसम में खेतों को खाली छोड़ देते थे तथा खरीफ की जमा नमी से रबी मौसम में खेती की जाती थी। किसानों ने जब सोयाबीन को खरीफ मौसम में

लगाना प्रारंभ किया तो इस फसल के उत्पादन से रबी की द्वितीय फसलों में कोई खराब प्रभाव नहीं पड़ा। प्रदेश की जलवायु सोयाबीन के अनुकूल होने के कारण पूर्व में किसानों द्वारा कम उन्नतशील एवं देर से पकने वाली सोयाबीन की खेती प्रारंभ की गई। वर्ष 1989–90 में भारत सरकार के विशेष प्रयासों के उपरांत उन्नत किस्म की जल्दी पकने वाली (90 दिन) सोयाबीन फसल के उत्पादन में वृद्धि हुई। उन्नत किस्म की पैदावार से सोयाबीन की उत्पादकता में वृद्धि होने लगी। जिससे किसानों का रूझान इस फसल की ओर बढने लगा जिससे छोटे और मझोले किसान भी सोयाबीन की कृषि की ओर अग्रसर होने लगा। शासन द्वारा सोयाबीन की खेती को बढ़ावा देने के लिये उपयुक्त बीज, खाद, कल्चर, कृषि संयत्र एवं पौध संरक्षण की भी व्यापक व्यवस्था सुनिश्चित की जाती है। मध्यप्रदेश में सोयाबीन की सफलता को देखते हुये भारत शासन ने राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान केन्द्र (National Research Centre for Soybean) की स्थापना की है, जिसका मुख्यालय इन्दौर में है। यह केन्द्र प्रदेश में सोयाबीन के अनुसंधान में सक्रिय सहयोग देता है। इसके अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय एवं अन्य कृषि महाविद्यालयों द्वारा भी सोयाबीन पर अनुसंधान कार्य किया जा रहा है। भारत से निर्यात होने वाले सोयाबीन उत्पादों में सोया खली का बहुत बड़ा स्थान है। भारत विश्व के लगभग 40 देशों में सोया खली का निर्यात करता है। इस परिप्रेक्ष्य में मध्यप्रदेश की अग्रणी संस्था सोयाबीन प्रोसेसर्स ऐसोसियेशन इन्दौर (सोपा) महत्वपूण भूमिका निर्वाह कर रहा है, यहॉ से बहुत बड़ी मात्रा में खली का निर्यात किया जा रहा है। मध्यप्रदेश तथा भारत सरकार प्रोटीन समृद्ध सोया खली के अन्य उत्पादन तैयार कर निर्यात हेतु प्रयासरत है।

शोध प्रविधि :– प्रस्तुत शोध कार्य हेतु महत्वपूर्ण तिलहनी फसल सोयाबीन के उत्पादन एवं विपणन हेतु मध्यप्रदेश का चयन किया गया है। शोध का प्रमुख उद्देश्य मध्यप्रदेश में सोयाबीन की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की संभावनाओं का पता लगाना है। इस बाबत् सोयाबीन के क्षेत्राच्छादन, उत्पादन, उत्पादिता, विपणन की प्रवृत्ति एवं उच्चवचनों का अध्ययन किया गया तथा उक्त अध्ययन हेतु मुख्यतः द्वितीयक समंकों का चयन किया गया। सोयाबीन के क्षेत्रफल, उत्पादन, उत्पादिता एवं मण्डियों में सोयाबीन की आवक हेतु वर्ष 2000–01 से 2012–13 तक समंको का संकलन किया गया। द्वितीयक समंकों को समय–समय पर भारत शासन, राज्य शासन, जिला अथवा विकासखण्डवार, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, इन्टरनेट आदि में प्रकाशित सामग्री से संकलित किया गया है। विभिन्न माध्यमों से सूचनाऐं, जानकारियॉ एवं समंक प्राप्त एवं एकत्रित करने के पश्चात् उनका तालिका द्वारा प्रस्तुतीकरण एवं सांख्यिकीय एवं बीजगणितीय प्रविधियों की सहायता से विश्लेषण किया गया तथा मध्यप्रदेश में सोयाबीन के उत्पादन, संग्रहण एवं विपणन की वृद्धि का अनुपात का पता लगाया गया।

सोयाबीन के क्षेत्र एवं उत्पादन की प्रवृत्ति का विश्लेषण :– वर्तमान में सोयाबीन मध्यप्रदेश के किसानों की खरीफ मौसम में बोये जाने वाली प्रमुख फसल है। भारत मे कुल उत्पादित सोयाबीन का आधे से अधिक उत्पादन अकेले मध्यप्रदेश के किसानों की खरीफ मौसम में बोये जाने वाली प्रमुख फसल है। यहॉ की जलवायु सोयाबीन उत्पादन के लिये सर्वथा अनुकूल है। सोयाबीन की फसल के बारे मे कृषकों को जागरूक करने का श्रेय मध्यप्रदेश शासन को भी जाता है जिस कारण किसान जागरूक हो रहे हैं तथा किसानों के रूझान, उत्साह एवं सतत् प्रयास के कारण भारत दुनिया में सोयाबीन उत्पादन में पॉचवें स्थान पर है। देश के उत्पादन का लगभग 53 प्रतिशत उत्पादन मध्यप्रदेश में होता है। वर्ष 2000–01 में भारत मे कुल 6420 हजार हैक्टेयर क्षेत्रफल पर 5280 हजार टन सोयाबीन उत्पादित किया गया जिसमें मध्यप्रदेश में 4475 हजार हैक्टेयर भूमि पर 3431 हजार टन उत्पादन हुआ अर्थात् कुल उत्पादन का 65% मध्यप्रदेश में उत्पादित किया गया जबकि वर्ष 2012–13 में भारत 10840 हजार हैक्टेयर में 14670 हजार टन सोयाबीन उत्पादित किया गया। जिसमें से 6030 हजार हैक्टेयर पर 7800 हजार टन अर्थात् लगभग 53% उत्पादन प्रदेश में हुआ। वर्ष 2000–01 से 2012–13 तक भारत एवं मध्यप्रदेश में सोयाबीन का क्षेत्रफल एवं उत्पादन का अध्ययन करें तो पता लगता है कि विगत् वर्षो में प्रदेश के उत्पादन में

कुछ उच्चावचनों के बाद भी मध्यप्रदेश प्रथम स्थान पर बना हुआ है। जहॉं तक प्रति हैक्टेयर उत्पादिता का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि सत्र 2000–01 मे मात्र 767 किग्रा प्रति हैक्टयर थी जो 2012–13 में बढकर 1293 किग्रा प्रति हैक्टयर हो गई तथा देश में उत्पादित सोयाबीन के लगभग बराबर है। जिसे तालिका क्रमांक 1 से समझा जा सकता है।

यदि मध्यप्रदेश का अन्य प्रदेशों से तुलनात्मक अध्ययन किया जाये तो पता लगता है कि वर्ष 2012–13 में भारत में कुल 10.84 मिलियन हैक्टयर पर सोयाबीन बोया तथा जिसमें मध्यप्रदेश में 55.64%, महाराष्ट्र में 29-69% एवं राजस्थान में 9.59% सोयाबीन का क्षेत्र रहा तथा उत्पादन के आंकड़ों पर ध्यान दें तो देश क कुल उत्पादन 14.67 मिलियन टन में मध्यप्रदेश में 53.18%, महाराष्ट्र में 31.85% एवं राजस्थान में 10.01% उत्पादन हुआ। (तालिका क्र.2) अर्थात देश के कुल उत्पादन का लगभग 95% उत्पादन इन तीन राज्यों में हो रहा है जिसमें मध्यप्रदेश प्रथम स्थान पर है।

मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में सोयाबीन के क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादिता का विवरण तालिका क्रमांक 3 में दिया गया है। तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है सोयाबीन के क्षेत्राच्छादन एवं उत्पादन में उज्जैन जिला प्रथम स्थान पर है जहॉं 455.73 हजार है. पर 599.93 हजार टन उत्पादन हुआ जो प्रदेश के कुल क्षेत्र का 7.82% तथा कुल उत्पादन का 8.31% है। उपरोक्त तालिका में मध्यप्रदेश में सोयाबीन उत्पादन के पमुख जिले उज्जैन, शाजापुर, देवास, सीहोर, सागर, धार, मंदसौर, विदिशा, बैतूल, छिन्दवाड़ा जिले प्रमुख भूमिका निभा रहे है जिनमें प्रदेश के कुल उत्पादन का लगभग 60% उत्पादन हो रहा है। जहॉं तक प्रति हैक्टेयर उत्पादिता का अध्ययन किया जाये तो सर्वाधिक उत्पादित छिन्दवाड़ा जिले में देखी गई है जहॉं 154 हजार है. पर 312 हजार टन सोयाबीन उत्पादित किया गया तथा उत्पादिता 2027.99 किग्रा/है. रही।

तालिका क्रमांक 1. भारत एवं मध्यप्रदेश में सोयाबीन का क्षेत्रफल/उत्पादन/उत्पादिता

वर्ष	भारत			मध्यप्रदेश			देश के उत्पादन में म.प्र. का पतिशत
	क्षेत्रफल 000 हैक्टे.	उत्पादन 000 हैक्टे.	उत्पादिता किग्रा/हैक्टे	क्षेत्रफल 000 हैक्टे.	उत्पादन 000 हैक्टे.	उत्पादिता किग्रा/हैक्टे	
2000-01	6420	5280	822	4475	3431	767	65%
2001-02	6340	5960	940	4450	3735	840	62.7%
2002-03	6110	4650	762	4191	2674	638	57.5%
2003-04	6560	7820	1193	4212	4653	1106	59.5%
2004-05	7570	6870	908	4594	3760	819	54.7%
2005-06	7710	8270	1073	4590	4814	1050	58.2%

2006-07	8320	8850	1063	4705	4789	1018	54.1%
2007-08	8880	10970	1235	5202	5368	1033	48.9%
2008-09	9510	9900	1040	5295	5924	1120	59.8%
2009-10	9730	9966	1026	5454	6428	1180	64.4%
2010-11	9600	12740	1327	5560	6670	1201	52.35%
2011-12	10110	12210	1208	5786	6497	1124	53.21%
2012-13	10840	14670	1353	6030	7800	1293	53.16%

Source ."Area production and yield of soybean in major producing state" –Agriculture Statistics at a glance 2014 Govt. of India, Ministry of Agriculture, Directorate of Economics and Statistics, page No. 112-13

तालिका क्रमांक 2. भारत में प्रादेशिक स्तर पर सोयाबीन की स्थिति (2012–13)

प्रदेश	क्षेत्रफल (मि.है)	भारत मे प्रतिशत	उत्पादन (मि. टन)	भारत में प्रतिशत	उत्पादिता (किग्रा / हैक्ट)
मध्यप्रदेश	6.03	55.64	7.80	53.18	1293
महाराष्ट्र	3.22	29.69	4.67	31.85	1451
राजस्थान	1.04	9.59	1.47	10.01	1412
आंध्रप्रदेश	0.16	1.47	0.29	1.97	1818
कर्नाटक	0.17	1.57	0.18	1.21	1047
अन्य	0.22	2.04	0.26	1.77	1182
कुल भारत	**10.84**	**100**	**14.67**	**100**	**1353**

Source Agriculture Statistics at a glance 2014 Govt. of India, Ministry of Agriculture, Directorate of Economics and Statistics, page No. 114

तालिका क्रमांक 3. मध्यप्रदेश के प्रमुख सोयाबीन उत्पादक जिले (2012–13)

जिले	क्षेत्रफल (मि.है)	कुल का प्रतिशत	उत्पादन (मि. टन)	कुल का प्रतिशत	उत्पादिता (किग्रा / हैक्ट)
उज्जैन	455.73	7.82	599.93	8.31	1315.46'
शाजापुर	358.37	6.15	445.63	6.17	1242.24
देवास	328.80	5.64	435.23	6.03	1318.42
सागर	318.93	5.47	387.17	5.36	1214.12
राजगढ	312.77	5.37	327.70	4.54	1045.29
सीहोर	294.13	5.05	425.27	5.89	1453.40
धार	274.40	4.71	381.93	5.29	1390.41

मंदसौर	269.93	4.63	374.10	5.18	1377.81
विदिशा	260.40	4.47	328.20	4.55	1267.92
इंदौर	225.90	3.88	262.33	3.63	1159.05
बैतूल	223.97	3.84	331.63	4.59	1470.14
होशंगाबाद	220.37	3.78	218.67	3.03	995.85
गुना	219.83	3.77	275.87	3.82	1253.90
रतलाम	217.37	3.73	266.23	3.69	1218.45
हरदा	176.83	3.03	263.17	3.65	1493.08
खण्डवा	172.37	2.96	123.67	1.71	713.52
रायसेन	171.77	2.95	155.40	2.15	915.05
छिन्दवाड़ा	154.00	2.64	312.20	4.32	2027.99
शिवपुरी	150.30	2.58	148.47	2.06	992.62
नीमच	123.00	2.11	150.13	2.08	1217.8
सिवनी	120.43	2.07	135.47	1.88	1125.87
भोपाल	108.33	1.86	146.63	2.03	1352.84
अन्य जिले	669.90	11.49	723.54	10.02	1080.07
मध्यप्रदेश	**5827.83**	**100**	**7218.57**	**100**	**1235.56**

मध्यप्रदेश में सोयाबीन का विपणन :– मध्यप्रदेश सोयाबीन के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में तो देश में प्रथम स्थान पर है साथ ही इसके प्रसंस्करण एवं विपणन की प्रमुख इकाईयों एवं माध्यमों में भी आगे है। प्रदेश में सोयाबीन के विपणन का प्रमुख माध्यम कृषि उपज मण्डियॉं है। मध्यप्रदेश में संभाग एवं जिला स्तर पर विभिन्न कृषि उपज मण्डियॉं सोयाबीन के विपणन कार्य में संलग्न है, वर्ष 2000–01 से 2012–13 तक प्रदेश की कृषि उपज मण्डियों में सोयाबीन की आवक का विवरण तालिका क्रमांक 4 में दर्शाई गई है।

तालिका के विगत 13 वर्षों के आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि मध्यप्रदेश की कृषि उपज मण्डियों में सोयाबीन की वार्षिक आवक में कुछ उच्चावचनों के साथ वृद्धि दर्ज की गई। वर्ष 2000–01 में जहॉं कुल वार्षिक आवक 3195348 मि.टन थी वह 2012–13 में बढ़कर 4353513 मि. टन. हो गई अर्थात् इसमें आधार वर्षे (2000–01) की तुलना में 136% की वृद्धि हुई। विगत् दशक में सोयाबीन की कुल आवक का ओसत 4069459 मि.टन रहा। मध्यप्रदेश में सोयाबीन के उत्पादन में आवक के प्रतिशत तालिका क्रमांक 5 में दर्शाया गया है।

तालिका क्र. 5 का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ प्रदेश की मण्डियों में उत्पादन का औसत 79% सोयाबीन की आवक है अर्थात् प्रदेश में सोयाबीन के विपणन में कृषि उपज मण्डियॉं प्रमुख माध्यम है। तथापि वर्ष 2000–01 में जहॉं उत्पादन की 93% आवक थी वह 2012–13 म घटकर 56% रह गई अर्थात् विगत् वर्षों में मण्डियों में आवक तुलनात्मक रूप से घटी है। प्रदेश में कई किसान सीधे प्रसंस्करण मिलों को

भी सोयाबीन का सीधे विक्रय कर देते हैं। प्रदेश में लगभग 60–65 तेल प्रसंस्करण मिले तथा सोपा, ऑइल फैड, कृषि विश्वविद्यालय आदि संस्थान सोयाबीन के अनुसंधान एवं प्रसंस्करण तकनीकों में वृद्धि का कार्य कर रही हैं तथा बची हुई खली का निर्यात किया जाता है। ये संस्थायें मुख्यतः सोयाबीन से तेल निकालने का कार्य करती है तथा कुछ प्रसंस्करण यूनिट से तेल के अतिरिक्त सोयाबीन के अन्य उत्पाद यथा सोया आटा, नगट्स, बड़ी आदि भी बनाई जा रही है। इसके अतिरिक्त मध्यप्रदेश राज्य बीज निगम द्वारा सोयाबीन की उन्नत पैदावार हेतु बीजों के उत्पादन एवं प्रसंस्करण का कार्य किया जा रहा है तथा किसानों को उन्नत बीज उपलब्ध कराने हेतु प्रयासरत् है।

तालिका क्रमांक 4. मध्यप्रदेश की कृषि उपज मण्डियों में सोयाबीन की आवक

वर्ष	आवक (मि.टन)	आधार वर्ष की तुलना में प्रतिशत
2000-01	3195348	100%
2001-02	3525434	110%
2002-03	2337704	73%
2003-04	3358398	105%
2004-05	2492332	78%
2005-06	4169769	130%
2006-07	4695896	147%
2007-08	5123623	160%
2008-09	3928981	123%
2009-10	4352980	136%
2010-11	6492897	203%
2011-12	4876091	153%
2012-13	4353513	136%
औसत आवक	**4069459**	

स्त्रोत : म.प्र. विपणन बोर्ड की विभिन्न मण्डियों एवं मण्डी बोर्ड की वेवसाईट mpmandiboard.gov.in

तालिका क्रमांक 5. मध्यप्रदेश में सोयाबीन के उत्पादन एवं कृषि उपज मण्डियों की आवक

वर्ष	उत्पादन (हजार टन में)	आवक (हजार टन में)	आवक का उत्पादन में प्रतिशत
2000-01	3431	3195	93%
2001-02	3735	3525	94%
2002-03	2674	2337	87%
2003-04	4653	3358	72%
2004-05	3760	2492	66%
2005-06	4814	4169	87%
2006-07	4789	4695	98%
2007-08	5368	5123	95%

2008-09	5924	3928	66%
2009-10	6428	4352	68%
2010-11	6670	6493	97%
2011-12	6497	4876	75%
2012-13	7800	4353	56%
औसत आवक	5119	4069	79%

प्रदेश में सोयाबीन की उन्नत किस्मों की पैदवार हेतु मध्यप्रदेश राज्य बीज एवं विकास निगम द्वारा प्रमाणित बीजों का उत्पादन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त सोयाबीन के प्रसंस्करण हेतु प्रदेश में कई प्रसंस्करण इकाईयों कार्यरत् है जहॉ प्रदेश एवं देश भर की मण्डियों से सोयाबीन एकत्रित कर उनका प्रसंस्करण किया जाता है। भारत में सर्वाधिक सोयाबीन उत्पादन मध्यप्रदेश में होने के कारण सोयाबीन के उत्पादन में अधिक प्रगति हेतु सोयाबीन पर अनुसधान के साथ–साथ अन्य उत्पादों के निर्माण, विपणन एवं निर्यात आदि में उत्तरोत्तर वृद्धि के उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रदेश में सर्व–सुविधा संपन्न प्रतिष्ठान स्थापित किये गये। जिनमें सोयाबीन प्रोसेसर्स एसोसियेशन ऑफ इण्डिया (सोपा) इन्दौर, मध्यप्रदेश राज्य तिलहन उत्पादक सहकारी संघ मार्यादित भोपाल (ऑइल फैड) एवं राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान केन्द्र इन्दौर प्रमुख है। ये संस्थान सोयाबीन पर अनुसंधान, प्रसंस्करण, निर्यात, प्रजनक बीज उत्पादन के कार्य में संलग्न है तथा मध्यप्रदेश का कृषि विभाग उन्नत बीजों के उत्पादन तथा उपार्जन करके कृषकों तक पहुंचाने का प्रबंध करता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :– मध्यप्रदेश में सोयाबीन के उत्पादन, उत्पादकता, प्रसंस्करण, विपणन, अनुसंधान में मध्यप्रदेश शासन एवं सोयाबीन के अनुसंधान केन्द्र महती भूमिकायें निभा रहे है जिससे प्रदेश में सोयाबीन के उत्पादन, संग्रहण एवं विपणन में लगातार वृद्धि हो रही है। उक्त संस्थाओं के अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विभागों, बीज निगम आदि में भी सोयाबीन की उन्नत फसलों हेतु लगातार प्रयास किया जा रहा है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मध्यप्रदेश में सोयाबीन के क्षेत्रफल, उत्पादन, प्रसंस्करण तथा विपणन में लगातार वृद्धि हो रही है। देश में सर्वाधिक सोयाबीन उत्पादन में विगत् कई वर्षों से मध्यप्रदेश प्रथम स्थान पर बना हुआ है तथापि उत्पादिता में वृद्धि की जानी आवश्यक है। भारत की प्रति हैक्टेयर उत्पादिता विश्व की उत्पादिता की तुलना में बहुत कम है तथा देश का सर्वाधिक उत्पादन मध्यप्रदेश मे किया जा रहा है अतः उत्पादिता में वृद्धि हेत प्रयास किये जाने चाहिये। इसी प्रकार मध्यप्रदेश में सोयाबीन विपणन हेतु कृषि उपज मण्डियॉ, प्रसंस्करण इकाईयॉ, प्रतिष्ठान कार्यरत् है एवं विगत वर्षों में इसमें स्पष्टतः वृद्धि हुई है तथापि अध्ययन से यह तथ्य भी सामने आया है कि प्रदेश में पूर्व में 100 से अधिक प्रसंस्करण इकाईयॉ थी जिसमें कई यूनिट हानि, समस्या, लेबर, उपयोग में कमी आदि के कारण बंद हो चुकी है, जिससे सोयाबीन के प्रसंस्करण में कठिनाई उत्पन्न हो रही है। प्रदेश की जलवायु सोयाबीन के अनुकूल है अतः उन क्षेत्रों में जहॉ अभी सोयाबीन की खेती में कमी है किसानों को सोयाबीन उत्पादन हेतु प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है।

संदर्भ :–

1. Acharya S.S., Agrawal, N.L. 2004. "Agricultural Marketing In India". Oxford and IBH Publishing, New Delhi.
2. Ahirwar, R.F.; Nahatkar, S.B.; Sharma, H.O. 2006. "Growth and Supply Response in Malwa Plateau of Madhya Pradesh". Soybean Res. Journal, 4:49-53.

3. Ahirwar, R. S.; Nahatkar, S.B.; Sharma, O.P. 2007. "Profitablity and Input Use Efficiency in Cultivation of Soybean in Malwa Plateau of M.P." Soybean Research Journal Vol. 5, Page 43-49.
4. Ahirwar, R.F.; Verma, A.K.; Raghuwanshi, S.R.S.2016. "Analysis of GrowthTrends and Variability of Soybean Production in Different Districs of Madhya Pradesh"- Soybean Research 14(2):89-96.
5. GOI.2014 Agricultrual Statistics at a Glance. Oxford University Press New Delhi. Page 214.
6. Banga, G; Kumar, B; Singh, Gill. 2010. "Marketing Practices followed by Soybean Processors in Punjab" Soybean Research, 8: 64-74.
7. Banafar, K.N.S. (2003) "Economics Processing of Soybean in Sehore District of Madhya Pradesh" – Indian Journal of Agriculture Economics, 419 words.
8. Singh B.B. 2006. "Success of Soyabean in India: The Early Challenges and Pioneer Promoters," Asian Agriculture History 10, 1, 43-45.
9. Website of M.P. Marketing Board – mpmandiboard.gov.in
10. Website of Soybean Processors Association Indore-www.sopa.org.